दैनिक जागरण, 15-5-16 पृ-21

अंधाधुंध दोहन : पाताल तोड़ कुएं वाले तराई क्षेत्र की हालत चिंताजनक

सूखे को गले लगाने को बेताब तराई

सुरेंद्र प्रसाद सिंह, पंतनगर

40

फीसद पाताल तोड़ कुएं वाले क्षेत्रों में पानी सूंख गया है

◆ धान की ताबड़तोड़ खेती ने तराई में बिगाड़ा जल और मिट्टी का संतुलन

ऐसे ही सालभर धान की फसल लहलहाती रही तो वह दिन दूर नहीं जब तराई का गला सूख जाएगा। समूचा तराई क्षेत्र जैसे देश के अन्य हिस्से की तरह सूखे को गले लगाने को बेताब है। पानी की बहुतायत वाले इस क्षेत्र में पानी की जबरदस्त बर्बादी हो रही है। भीषण गरमी में धान की फसल के लिए भूजल का अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। नतीजतन तराई के 40 फीसद पाताल तोड़ कुएं वाले क्षेत्र सूख गए हैं।

पंजाब और हरियाणा में इस तरह धान की खेती पर सालों पहले सख्त प्रतिबंध लगा दिया गया है। लेकिन तराई में भूजल दोहन जिस तेजी से हो रहा है, उसे देखते हुए यहां भी धरती के नीचे के पानी का स्तर तेजी से नीचे भाग रहा है। केंद्रीय भूजल बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक तराई के 40 फीसद पाताल तोड़ कुएं वाले क्षेत्रों में पानी सूख गया है। जहां बिना पंप किए ही पानी ऊपर बहने लगता था, वहां का जल स्तर नीचे चला गया है। तराई की इस चिंताजनक हालत की जानकारी केंद्रीय जल संसाधन मंत्रालय को भेज दी गई है। रिपोर्ट के मुताबिक कमोबेश समूचे उत्तराखंड में भूजल का स्तर चिंताजनक रूप से नीचे जा रहा है। लेकिन तराई के जिन क्षेत्रों में पानी की बहुतायत थी, वहां सालभर में धान की कई-कई फसलों की खेती ने मिट्टी व जलापूर्ति का संतुलन बिगाड़ दिया है। उधम सिंह नगर, जसपुर और काशीपुर में पिछले एक दशक में भूजल का स्तर दो से चार मीटर तक नीचे गया है। इस बिगड़ते हालत को रोकने के लिए कानूनी प्रतिबंध की जरूरत बताई जा रही है। रिपोर्ट के मुताबिक राज्य के ऊधम सिंह नगर जिले के रुद्रपुर का इलाका गंभीर संकट के दौर में पहुंचने वाला है। 'अन्न का कटोरा' कहे जाने वाले इन जिलों के 50 में से 47 स्थलों में भूजल स्तर चार मीटर तक नीचे गया है। ऊधम सिंह नगर जिले में सालभर में धान की तीन-तीन फसलें उगाई जाती हैं, जिसके लिए अंधाधुंध पानी खींचा जा रहा है। गोविंद बल्लभ पंत कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर मंगला राय का कहना है "समूचा तराई पंजाब और हरियाणा के नक्शे कदम पर चल रहा है। गर्मी में धान की फसल के लिए भूजल का अंधाधुंध दोहन इस पूरे क्षेत्र को 'बेपानी' कर देगा। राज्य सरकार को चाहिए कि इस तरह के दोहन पर सख्त प्रतिबंध लगाए।' इस तरह की खेती से जल और मिट्टी का संतुलन भी बिगड़ रहा है।

प्रभारी, समाचार पत्र यूनिट